आषाढ़ कृष्ण पक्ष

6 जून से 21 जून 2020 तक

ऋतु ग्रीष्म
सूर्य
उत्तरायण

तिथि	दिनांक	सूर्योदय	सूर्यास्त
प्रतिपदा	06.06.20	5.28	19.12
अष्टमी	13.06.20	5.27	19.14
अमावस्या	21.06.20	5.27	19.17

तिथि	वार	नक्षत्र	दिनांक	चन्द्र संचार	व्रत पर्व त्योहार
प्रतिपदा	शनि	ज्येष्ठ	06.06.20	धनु 15.11	गुरू हरगोविन्द साहिब जयंती
द्वितीया	रवि	मूल	07.06.20	धनु	सर्वार्थ सिद्धि योग 5.28 से 14.10 तक
तृतीया	सोम	पूर्वाषाढ़	08.06.20	म. 19.48	चतुर्थी व्रत चन्द्रोदय 21.58
चतुर्थी	मंगल	उत्तराषाढ़	09.06.20	मकर	शुक्र (तारा) उदय
पंचमी	बुध	श्रवण	10.06.20	कु. 27.45	पंचक आरंभ 27.45
षष्ठी	गुरू	घनिष्ठा	11.06.20	कुम्भ	पंचक
सप्तमी	शुक्र	शतभिषा	12.06.20	कुम्भ	पंचक, बालश्रम निषेध दिवस
अष्टमी	शनि	पूर्वाभाद्र	13.06.20	मी.14.47	पंचक, कालाष्टमी व्रत
नवमी	रवि	उत्तराभाद्र	14.06.20	मीन	पंचक, मिथुन संक्राति प्रवेश 23.54, पुण्य काल अगले दिन, स.सि.यो. 5.27 से 24.21
दशमी	सोम	रेवती	15.06.20	मेष 27.16	पंचक समाप्त 27.16
दशमी	मंगल	अश्विनी	16.06.20	मेष	अमृत सिद्धि व सर्वार्थ सिद्धि योग 5.27 से 29.27 तक, दशमी तिथि की वृद्धि
एकादशी	बुध	अश्विनी	17.06.20	मेष	योगिनी एकादशी व्रत
द्वादशी	गुरू	भरणी	18.06.20	वृष 15.00	प्रदोष व्रत
त्रयोदशी	शुक्र	कृत्तिका	19.06.20	वृष	मास शिवरात्री, रोहिणी व्रत
चतुर्दशी	शनि	रोहिणी	20.06.20	मिथुन 24.30	सूर्य दक्षिणायन, वर्षाऋतु आरंभ, अमृत सिद्धि व सर्वार्थ सिद्धि योग 5.27 से 12.01
अमावस्या	रवि	मृगशिरा	21.06.20	मिथुन	देव पितृ कार्य अमावस्या, सूर्य ग्रहण 10.20 से, विश्व योग दिवस

अग्निवास: जिस दिन हवन करना है उस दिन अग्निवास का चिन्तन करना आवश्यक है। अभीष्ट तिथि संख्या में वार संख्या जोड़कर उसमें एक और जोड़ें। योग में चार का भाग दें। शेष तीन अथवा शून्य रहने पर अग्नि का का वास पृथ्वी पर होता है और सुख कारक होता है। शेष एक बचने पर अग्नि का वास आकाश में होता है और प्राणघातक होता है। शेष दो बचने पर अग्नि का वास पाताल में होता है और धन की क्षति करता है।

नोट: यहाँ तिथि की गणना अमावस्या के बाद शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से और वार की गणना रविवार से की जाती है।

अग्निवा का विचार कहाँ अति आवश्यक है: काम्य कर्म (किसी कामना से किया जाने वाला विधान), लाख करोड़ मंत्रों का हवन (महायज्ञ), शान्ति कर्म आदि हवनों में अग्निवास चक्र का देखना अति आवश्यक है।

अग्निवास का विचार कहाँ आवश्यक नहीं है: विवाह, यात्रा, व्रत, मुंडन, यज्ञोपवीत और सम्पूर्ण प्रकार के व्रत, दुर्गा विधान, महारूद्र व्रत, अमावस्या, ग्रहण, पुत्र जन्म कृत्य, नित्य नैमित्तिक कार्यों में हवन के लिए। अग्निवास चक्र का देखना, अति आवश्यक है।